"वेदों को लिपि देने वाले प्रथम पुरूष भगवान चित्रगुप्त"

"चित्रगुप्ताया: नमस्तुभ्यम् वेदअक्षरा दातारे"

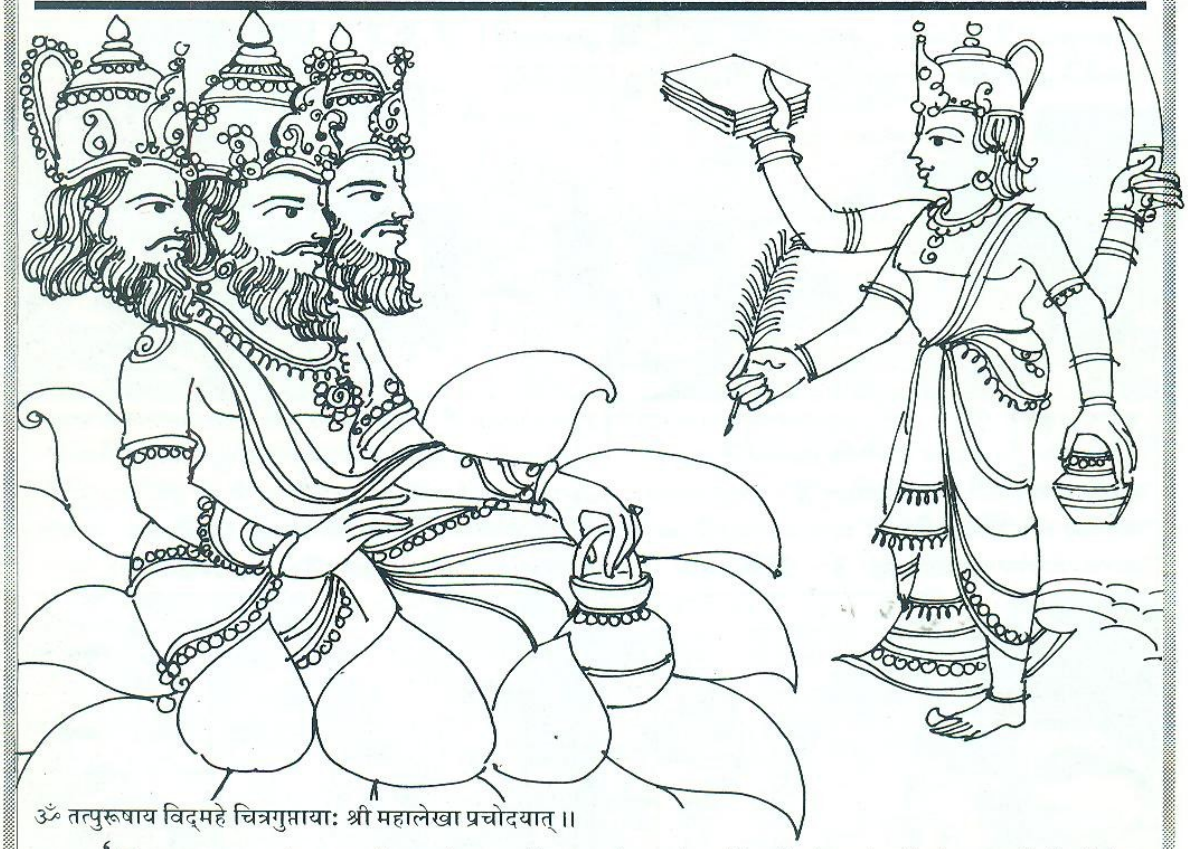

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे चित्रगुप्ताया: श्री महालेखा प्रचोदयात् ।।

'परब्रह्म परमात्मा सर्वकारण सर्वाधार सर्वस्वरूप सर्वेश्वर सर्वान्तरयामी ; सर्व व्यापक के मुख से ब्राह्मण बाहू से क्षत्रिय ऊरू से वैश्य तथा चरण कमल से शुद्ध शूद्र की उत्पत्ति हुई - वे परमात्मा जो सदैव पूर्ण रहते हैं उसमें से कुछ निकल जाने पर भी शेष न रहकर सदा पूर्ण ही रहता है

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।

यही एक ब्रह्म अपने को तीन प्रकार के रूपों शक्ति स्वरूपा विद्यायिका ब्रह्मा २ कार्यपालिका विष्णु ३ - न्यायपालिका शिव के रूप को प्रकट कर मानव सृष्टि संकल्पद्वारा सर्वप्रथम सप्त महाऋषियों फिर राजर्षियों के विस्तार के साथ मनुओं प्रजापतियों द्वारा प्रजनन शक्ति के क्रमश: विस्तार से चौरासी लाल योनियों में उद्भिज, जरायुज, स्वदेज एवं अंडज का निर्माण हुआ। सृष्टिचक्र गतिशील रहा आये इस कारण से वेदानुसार ऐसे विधान नियम बने कि जो मनुष्य जैसा शुभ अशुभ कर्म करे, मरने के बाद उसमें स्थित ईश्वर अंश अविनाशी जीव शरीर को छोड़कर जाये तो उसे किस योनि में पुन: जन्म दिया जाय जिससे सृष्टि में आवागमन का क्रम बना रहे यह कार्य धर्मराज की जिम्मेदारी में था - एक बार धर्मराज ने ब्रह्मा जी से कहा कि मुझे इस कार्य में बड़ी कठिनाई हो रही है अत: उनके लेखा जोखा के लिये कर्मानुसार गति के सुधार व्यवहार के लिये एक योग्य, शक्तिशाली, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, नीरक्षीर विवेकी व्यक्ति का निर्माण होना आवश्यक जान पड़ा। ब्रह्माजीने परमात्मा का ध्यान लगया आदेश मिला- तप -करो तुम्हे ऐसा योग्य पुरूष प्राप्त होगा - ब्रह्माजी ने यह सत्य संकल्प लेकर घोर तपस्या की - समाधि लग गई - समाधि जब टूटी तब ब्रह्मा ने प्राण वायु को बाहर निकाला उनकी काया में स्थित एक तेजोमय दिव्य श्याम वर्ण का विष्णु-स्वरूप चतुर्भुज सुन्दर पुरूष एक हाथ में मसी भाजन (दावात) दूसरे हाथ में लेखनी (कलम) तीसरे हाथ में पुस्तक (कागज) और वो थे हाथ में तलवार लिये प्रकट हुये

"**स्कन्दपुराण** (११/३९) में महागया है :-

यस्या तिथौ युमान्य: यमराज देव:
सम्मोजित: प्रतितिथौ स्वसोस हृदयेन
तस्मात् वस: करबलदिहि यो मनक्ति
प्राप्नोति वित्त शुभमाद मुकृमां स:

पद्मपुराण खण्ड ३ में - अंकित है कि

शांति प्रलये चैव भोगा भोगे कृता कृते
लेखकानां सदाश्री यश्चित्रगुप्तनमोऽस्तुते
प्रियपात्र समुत्यन: समुद्र मथने कृत
चित्रगुप्त महाबाहो ममापूर्वरयो भव ।।

भविष्यपुराण पुलस्त्य खण्ड - में कहा गया है :-

मसीभाजन संयुक्ता सदा चरसि भूतले
लेखनीच्छेदनी हस्त चित्रगुप्त नमोस्तुते ।।

चित्रगुप्त १४ मनुओं की गणना में आते हैं इसलिये चारों वर्णों ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र लोग इनका पूजन व तर्पण करते हैं।

''चित्र गुप्त नमस्तुभ्यं धर्मरूपाणि
तेषां त्वं पालको नित्य नम: शान्तिं प्रयच्छमे

उद दिव्य पुरूष ने ब्रह्मा जी से पूछा - प्रभु में कौन हूँ - मुझे किस हेतु प्रकट किया गया है मुझे आज्ञा दिजिये - ब्रह्मा ने कहा वत्स ! तुम मुझे घोर तपस्या करने पर प्राप्त हुये हो तुम मेरे चित्त में मेरी काया के अंदर गुप्त भगवत तत्व के रूप रूप में स्थित थे - बाहर इस रूप में प्रकट हुये हो तुम्हारा नाम चित्रगुप्त होगा और तुम कायस्थ कहलाओगे। तुम मेरे परमप्रिय मानसपुत्र हो - देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, अतिथियज्ञ, ऋत यज्ञ कर्मों का अनुष्ठान कर मानव को धर्मकार्य कर के दिखलाओ। तेरहवें यम के रूप में प्रतिष्ठित होकर और अव्यक्त रूप से मानव के चित्तमें वास करेगें और उनके अन्त: मरण के विचारों भावों और शुभ अशुभ वाह्य कर्मों को देखकर उनके कर्म का लेखा जोखा रखोगे, कर्म फल भोगने के लिये उनके कर्म फलानुसार स्वर्ग नर्क योनी का कर्म कर्त्तव्य निर्णय का प्रतिपादन तुम्हारे द्वारा होगा तुम्हें यमराजाय धर्मराजाय के नाम से जाना जायेगा। तुम्हें देव दानव यक्ष किन्नर आदि पूजेंगे तथा पृथ्वी निवासी तुम्हारा तर्पण करेंगे तुम्हें ॐ यमराजाय धर्मराजाय श्री चित्रगुप्ताय नम: कहकर श्रद्धापूर्वक बलिप्रदान करेंगे

ब्रह्माजी के कहने पर चित्रगुप्त जी ने सूर्य सविता शक्ति स्वरूपा गायत्री देवी की उपासना कर घोर तपस्या से सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिमान का वरदान प्राप्त किया।

''सं सुता चित्रगुप्तेन अर्चिता परमेश्वरी
प्राह प्रसाद वदना चामुण्डा जगदम्बिका
चित्रगुप्त तव्यापुत्र कृत मार धन मग
तस्मात तेऽदय मयादत्त वराणां चायमुत्मम

स्कन्दपुराण के अनुसार :-

एव तुस्तवत् तस्य चित्रस्य विमलात्मन
तथा तुष्ट: सहस्त्रांशु काले त महता विभु:
प्रोवाच सविता देव: वरं वरद सुव्रत
सोऽ ब्रवीद्यदि मे तुष्टो भावानि तीक्षा दीर्घतां
प्रौढ़त्व सर्वकार्येषु जायतां सन्मतिस्तथा
तत ततोर्थ प्रतिज्ञातं सूर्येण वर वर्णिभि:
तत: सर्वज्ञाता प्राप्त: चित्रोमित्र कुलोद्भव:

चित्रगुप्त गायत्री वेदमाता के सर्वश्रेष्ठ साधक थे -

''सवित्रया सहित: श्रीमाम् अथये चित्रगुप्त क:
विप्राणां यथामानं यज्ञ नाध्य यमे ।।पद्मपुराण।।

दैवीशक्ति पाकर श्री चित्रगुप्त जी जिस उद्देश्य के लिये अवतारित हुये उसमें ''यथायोग: कर्मसु कौशलं'' के साथ लगकर समस्त प्राणियों, वर्णों, विभिन्न जातियों में एकता, शांति, नैतिकता, सर्व धर्म समानत्व समभाव उचित व्यवस्था, सामंजस्यता और साम्प्रदायिक सद्भावना स्थापित करने के लिये सृष्टि के समस्त प्राणियों का स्वकर्म स्वधर्म सत्कर्म के लिये प्रेरित किया।

वेद के अक्षर लेखन और लिपि का प्रारंभ :-

ब्रह्मा के द्वारा ब्राह्मी लिपि का अवतरण हुआ इस अवतरण के प्रणेता प्रमाण चित्रगुप्त जी बने - लेखन प्रणाली का लिपिमय प्राकट्य चित्रगुप्त जी के माध्यम से हुआ। देववाणी संस्कृत को लिपिबद्धकर प्राणीमात्र के लिये सहज सुलभ बनाने में चित्रगुप्त प्रथम प्रणेता पुरूष बने। ऋषयोर मंत्र हष्टार: एवं श्रृति स्मृति की परंपरा पहले थी जिसे दृव्य रूप में सम्मुख प्रकरण योग के द्वारा चित्रगुप्त प्रतमत: लिपिकार प्रमाणित हुये - कहा गया है :-

''चित्रगुप्ताय नमस्तुभ्यं वेदा अक्षरादातारं''

प्रशासन और अनुशासन लागू करने मे कलम और आदेश के द्वारा तलवार शक्ति का भी न्यूनतम प्रयोग चित्रगुप्त जी के द्वारा किया गया।

चित्रगुप्त का आध्यात्मिक अर्थ :- मनुष्य का चित्त या मन हमेशा गुप्त रहता है। प्रत्येक मानव को ५ ज्ञानेन्द्रिय और ५ कर्मेन्द्रियां प्रदान की गई हैं - जिनके द्वारा कोई भी कर्म क्रियान्वित होता है -

१) मानव मन से संकल्प विकल्प करता है
२) बुद्धि तत्व विवेक का निर्णय करता है
३) अहंकार ममत्व को गतिप्रदान करता है
४) चित्त कर्म की चित्रात्मक दैवीय शक्ति का नाम ही चित्रगुप्त है। पुराणों में चित्रगुप्त को ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में स्वीकार किया गया है।

मार्कण्डेय पुराण में मिलता है कि दूसरे मन्वन्तर में स्वारोचिष में चित्रगुप्त चैत्र वंश में सुरथ नाम के राजा हुये थे - सातवें वैवस्वत मन्वन्तर मे चौदह आज भी चौदह यमों के साथ चित्रगुप्त को भी

जलदान तिलांजलि में चित्रगुप्त को दिया जाता है -

ॐ यमाय नमः ॐ अंतकाय नमः ॐ धर्मराजाय नमः
ॐ वैवस्ताय नमः ॐ कालाय नमः ॐ मृत्यवे नमः
ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ॐ औदुम्बराय नमः
ॐ दहनाय नमः ॐ नीलाय नमः
ॐ परिवेष्ठिते नमः ॐ वृकोदराय नमः
ॐ चित्राय नमः ॐ चित्रगुप्ताय नमः ॥

चित्र सारस्वत प्रदेश के राजा थे - सविता शक्ति चामुण्डा देवी से सर्वज्ञता पाकर यमपुरा दक्षिण दिशा के सिंहासन पर जब बैठे तब वे चित्रगुप्त के नाम से प्रसिद्ध हुये। ऋग्वेद में रक्षार्थ रण कुशल चित्रगुप्त को माना गया है। यमाचार्य चित्रगुप्त कठोपनिषद् की कथा में नचिकेता आहर्षि अद्दालक ऋषि का पुत्र था - महाभारत के अनुशासन पर्व के अध्याय १३ में देवपितरों ने एक बार चित्रगुप्त से पूछा था कि - दान के पुण्य का नाश है या नहीं।

''नहि दंतस्य दानस्य नाशो तीह कदाचन
चित्रगुप्त मतैः श्रुत्वा दृष्ट रोमः विभावसु

चित्रगुप्त के वंशज चित्ररथ ने चित्रकूट में राज्य स्थापित किया था - चित्रगुप्त ब्रह्मा के मानस पुत्र होने के कारण ब्राह्मण वर्ग के माने जाते हैं वेदान्त में चित्रगुप्त के पुत्र को माण्डव्यऋषि रेश्रष का दृष्टान्त प्राप्त होता है - न्याय संहिता में कहा गया है -

''ब्रह्मकाय सुमद भूतोकायस्थो ब्रह्मसंज्ञकः
कलैहि क्षत्रियो जातेः जप यज्ञ यज्ञेषुपार्थिवः

आदि युग में कायस्थ ब्राह्मण थे - कलयुग में क्षत्रिय जाति के माने गये हैं। ब्रह्मा का विशिष्ठ वरदान इनके साथ है :- धर्माधर्म विवेकार्थे धर्मराज पुरः सदा स्थिर्भूभवत ते पुत्र कालज्ञः त्व भविष्यसि। पुत्रा संसृज्य षुत्रत्वंतेवधर्मनि समा दिनां अस्मिन राज्येन ते पुत्राः राज्य नाशौ भविष्यति गच्छावन्ति पुरी तातत्पः कुरूमहीयते

अर्थात :- धर्म अधर्म विवेचन के लिये तुम सदा धर्मपुरी में विकास करो तुम कालज्ञ रहोगे अपने पुत्रों को धर्मदेवा प्रदान करो तथा अवन्तिका पुरी में क्षिप्रा नदी के तट पर जाकर तपस्या करो। जिस राज्य में तुम्हारे पुत्र न रहेंगे वह राज्य नष्ट हो जायेगा

अष्टाशिति सहस्त्रेस्तुमुनि निमिः
सहितो विधिः यज्ञोपवीतं कृत्वा
देदोतस्मै शुभाशीषः।

अट्ठासी हजार ऋषियों ने विधि विधान से यज्ञोपवीत प्रदान कर शुभाशीष दिया।

चित्रगुप्त विवाह प्रकरण : विधान :-

इनका विवाह धर्म शर्मा ब्रह्मर्षि ने ब्रह्माजी के प्रसाद से इरावती नाम की कन्या प्राप्त की। इस कन्या का विवाह चित्रगुप्तजी से हुआ। इनका दूसरा विवाह सूर्य भगवान के क्षत्री श्रद्धदेव मनु की पुत्री नन्दिनी के साथ माना जाता है।

चित्रगुप्त जी के इरावती जिसे शोभावती भी कहा जाता है- उससे आठ पुत्र हुये -

१. चारू : - मथुरा में बसे उनके वंशज माथुर कायस्थ कहलाये
२. सुचारू : - के वंशज गौड देश में बसे इसलिये गौड़ कायस्थ कहलाये
३. चित्रसार :-के वंशज काशी में निवास कर वेदों के पारांगत विद्वान बने ये निगम कहलाये - (गत काश्यां जितेन्द्रियः वेद पारगः)
४. चारूण :- नामक पुत्र गुजरात में नर्मदा नदी के तट स्थित कर्णली ग्राम में जा बसे वे कर्ण कायस्थ कहलाये
५. चित्र :- महानगरी में जा बसे भटनी ग्राम में बसने के कारण ये भटनागर कहलाये
६. मतिमान :- मतिमान के पुत्र सकसरिया ग्राम में बसे तो सक्सेना कहलाये
७. हिमवान :- देवी अम्बा माता की आराधना करने के कारण हिमवान के वंशज अम्बष्ट कहलाये
८. अतिन्द्रिय :- बंगला देश के नन्दग्राम में जा बसे कुलधर्म चारी होने के कारण कुलश्रेष्ठ कहलाये.

श्री चित्रगुप्त की दूसरी पत्नी क्षत्री श्राद्धदेव मनु की पुत्री नन्दिनी है - यम संहिता में जिसका नाम दक्षिणा भी लिखा है - इससे चार पुत्र हुये

१ - भानुपुत्र- श्रीवास नगरी में बसने के कारण श्रीवास्तव कहलाये
२ - विभानु - सुरसेन के निवासी सूरज ध्वज कहलाये
३ - विश्वभानु - मान सरोवर के पास बसने के कारण अष्ठाना कहलाये
४ - वीरभानु - ये भी पूर्वोत्तर मार्ग में रहने के कारण वाल्मीक कहलाये

खरे भी कायस्थ के अन्तरगत ही हैं ये अपने को श्रेष्ठ (चोखा) मानते हैं

चित्रगुप्त की बारहों सन्तानों का विवाह नाग कन्याओं के साथ हुआ था। कल्हण की राजतरंगिणी में कायस्थों को श्रेष्ठ राज कर्मचारी बतलाया गया है।

बंगाल में कायस्थों को बसु बोस, घोष, गृहमित्र, दत्तनाग, नाथ, दास, देव, सेन, पाल, और सिन्हा आदि कहा जाता है।

चित्रगुप्तजी का मत है कि नारियों का यज्ञोपवीत होना चाहिये वे गायत्री मन्त्र की अधिकारिणीष हैं - वे वेद पढ़ सकती हैं और पढ़ा सकती हैं -

''पुरा काले नारीणां मौजी वन्धन मिष्येत
अध्यापनं च वेदानां सवित्री वचनं तथा''

चित्रगुप्त महाराज के यमपुरी प्रस्थान करते समय ब्रह्मा ने उनके बारह पुत्रों को बारह ब्रह्मषियों को सौंप दिया था। पुलस्तस्य ऋषि ने भीष्म पितामह से कहा कि चित्रगुप्त पूजन से मनुष्य पृथ्वी पर प्रचुर भोगों को भोग कर अपने समस्त मनोरथ सफलकर विष्णु लोक को प्राप्त करता है। महाभारत मे चित्र गुप्त को धर्म का उद्धारक योग धारण करने वाला कर्मयोगी और धर्मशील पुरूष कहा है - चित्रगुप्तजी की अभ्यर्थना में भगवान राम के विवाह में यज्ञ के समय चित्रगुप्तजी के नाम से आहुति डाली गई थी।

याज्ञवल्क्य स्मृति में कायस्थ जाति के लेखक, मुन्शी, मुनीम, शासक, दीवान एवं राजस्व अधिकारी के रूप में बताया गया है।

पद्मपुराण में कहा गया है कि - दत्तात्रेय, पुलस्त्य भीष्म पितामह अगस्त्य मुनि, सौदास राजा को चित्रगुप्त पूजन से ही स्वर्ग सुख प्राप्त हुआ था भीष्म पितामह को चित्रगुप्त जी ने दर्शन दिया था

भविष्यपुराण :- में भीष्म ने चित्रगुप्त पूजन से इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त किया था।

गरूड़ पुराण :- में चित्रगुप्त को यमराजपुरी के राजा सम्बोधित कर के जीवों के कर्मों का लेखा जोखा धर्मराज के सामने प्रस्तुत करने तथा उनके कर्मानुसार गति दिलाने का उल्लेख किया गया है।

चित्रगुप्त जी ने उज्जैनी में सान्दीपनी आश्रम में तप करके दुर्गा मैया से चौदह मन्वन्तर तक अजर अमर रहने का वरदान प्राप्त किया था।

चित्रगुप्त जी के जो बारह पुत्र थे उनका विवाह नाग कन्याओं से कराया गया था- जो जानकारी के लिये आवश्यक है :-

१ - भानुपुत्र का विवाह पद्मिनी से
२ - विभानु का मालती से
३ - विश्वभानु का नर्मदा से
४ - चारू का भद्रकालिनी से
५ - चित्रसार का भुनंकाक्षी से
६ - मतिमान का पंकजाक्षी से
७ - सुचारू का गण्डकी से
८ - चारूस्त का कोकलेस सुता से
९ - हिमवान का सुखदम्मनी से
१० - चित्र का कामकला से
११ - अतेन्द्रिय का मनुज भाषणी से
१२ - चारूण का कर्णकी से हुआ

यह एक बड़े गौरव की बात है कि भारतवर्ष में भगवान चित्रगुप्त वंशज कायस्थों में ऐसी अनेक महान विभूतियाँ हो गई हैं जिनका भारत में कर्म क्षेत्र में अद्वितीय और अतुलनीय स्थान योगदान रहा है वैदिक पौराणिक मुगलकाल अग्रेंज युग और स्वतंत्र भारत के अनेक उच्च से उच्चतम पदों में कायस्थ जाति के स्वनाम धन्य लोगों का स्थान सर्वोच्च रहा है !

अंत में चित्रगुप्त भगवान के लिये प्रार्थना :-

नमो चित्रगुप्ताय श्यामं स्वरूपं
नमो धर्मराजाय न्यायी अनूपम
नमो ब्रह्म रूपं गुणा ज्ञान खानी
नमो भक्त वत्सल त्रैलोक्य ज्ञानी
नमो स्वर्गदाता जगत पापहारी
परम भक्त आनन्द कल्याणकारी
नमस्कार करूणासदन बुद्धिसागर
नमामि दयासिंधु चित्रगुप्तं नमामि ॥

- **विद्यावाचस्पति** डॉ. राजेश कुमार उपाध्याय ''नार्मदेय''
श्री कृष्णार्जुन सदन - श्री राजेन्द्र टॉकीज के पीछे
३ रा मकान - शहडोल (म.प्र.) ४८००१